

- 89 रत्नाद्रिस्तु कैलासो ऽष्टापदः स्फटिकाचलः ॥ १०२८ ॥ ४  
 90 क्रौञ्चः कुञ्चो ॥ १०२९ ॥ ४  
 91 ऽथ मलय आषाढो दक्षिणाचलः ॥ १०३० ॥ ४  
 92 स्यान्माल्यवान्प्रसवणो ॥ १०३१ ॥ ४  
 93 विन्ध्यस्तु तलबालकः ॥ १०३२ ॥ ४  
 94 शत्रुंजयो विमलाद्रि- ॥ १०३३ ॥ ४  
 95 रिन्द्रकीलस्तु मन्दरः ॥ १०३४ ॥ ४  
 96 सुवेलः स्यात्त्रिमुकुटस्त्रिकूटस्त्रिककुच सः ॥ १०३५ ॥ ४  
 97 उज्जयन्तो रैवतकः ॥ १०३६ ॥ ४  
 98 सुदारुः पारियात्रिकः ॥ १०३७ ॥ ४  
 99 लोकालोकश्चक्रबालो ॥ १०३८ ॥ ४  
 1 ऽथ मेरुः कर्णिकाचलः ॥ १०३९ ॥ ४  
 2 रत्नसानुः सुमेरुः स्वःस्वर्गिकाञ्चनतो गिरिः ॥ १०४० ॥ ४  
 3 शृङ्गं तु शिखरं कूटं ॥ १०४१ ॥ ४  
 4 प्रपातस्त्वतटो भृगुः ॥ १०४२ ॥ ४  
 5 मेखला मध्यभागो ऽद्रेर्नितम्बः कटकश्च सः ॥ १०४३ ॥ ४  
 6 दरी स्यात्कंदरो ॥ १०४४ ॥ ४  
 7 ऽवातविले तु गह्वरं गुहा ॥ १०४५ ॥ ४

— 89. Kailâsa (4 W.). — 90. Kraun'ka (2 W.). — 91. Malaja (3 W.). — 92. Mâljavant (2 W.). — 93. Vindhja (2 W.). — 94. Çatrum'gaja (2 W.). — 95. Mandara (2 W.). — 96. Trikûta (4 W.). — 97. Raivataka (2 W.). — 98. Sudâru (2 W.). — 99. Lokâloka (2 W.). — 1. 2. Meru (7 W.). — 3. Berggipfel (3 W.). — 4. Abgrund (3 W.). — 5. Bergabhang (3 W.). — 6. Berghöhle (2 W.). — 7. Natürliche Höhle (2 W.).